This work is a digital copy of a play which was scripted and performed by Jana Natya Manch, Delhi. It is being made available on the internet via digital means to enable performance, translation, adaptation, or academic study.

Jana Natya Manch is placing this work in the public domain under the Creative Commons Attribution Non-Commercial Share Alike License 3.0.

Usage guidelines

The rights to the work rest with Jana Natya Manch. You may use it under the following conditions:

+ You will make non-commercial use of the work.
+ Maintain attribution of the work to Jana Natya Manch.
+ Sharing the work with others will be contingent upon all of the above conditions being agreed to by every subsequent user.

For further information visit www.jananatyamanch.org

Note: This PDF was prepared by exporting an earlier version of the file which used proprietary fonts. Due to some incompatibility some of the fonts have not converted properly. We believe you will be able to read the play nevertheless.

हल्ला बोल

;जन नाट्य मंच १९८८ऋ ३५ मिनटऋ १० कलाकार। सी.आई.टी.यू. वेळ आह्वान पर, दिल्ली में नवंबर १९८८ की सात दिन की औद्योगिक हड़ताल की तैयारी वेळ लिए जनम ने चक्काजाम नाटक वेळ व्यापक प्रदर्शन किए। इस ऐतिहासिक हड़ताल वेळ बाद, उस नाटक में वुळछ परिवर्तन वेळ बाद, हल्ला बोल नाटक वेळ रूप में दिसंबर १९८८ से खेला गया।द्ध

पात्र विभाजन

१. सूत्रधार
२. पुलिस
३. जोगी
४. अश्शो / मज़दूर ४ / औरत १
५. बाबा / पात्र १ / लीडर १/ मज़दूर १/ रामपाल
६. मज़दूर ३ /पारबती
७. लीडर २ / मज़दूर २ / गुलाम रसूल
८. लीडर ३ / चमचा
९. लीडर ४ / लोकल नेता / राघवन
१०. अम्मा / औरत २

।एक पात्र नारे शुरू करता है। बाव़ळी मज़दूर लाल झंडा उठाए जुलूस में उसवेळ पीछे नारे लगाते हैं।।

सूत्रधार : बोल मजूरे हल्ला बोल, हल्ला बोल-हल्ला बोल...

गाना : हर ज़ोर-जुल्म की टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है
अभी तो ये अंगड़ाई है, आगे और लड़ाई है।
दम है कितना दमन में तेरे, देख लिया और देखेंगे।
जगह है कितनी जेल में तेरे, देख लिया और देखेंगे।

।एक अभिनेता उठकर उनका रास्ता रोकता है। उसवेळ सिर पर पुलिस वैळप और हाथ में डंडा है।।

पुलिस : ठहरो! ठहरो! मैं कहता हूं चुप हो जाओ। *;सब चुप होते हैं। सूत्रधार पुलिस से बेख़बर गाता रहता है। पुलिसवाला उसवेळ पीछे चलता है।द्ध*
अबे सुनी नहीं? मैं क्या कह रहा हूं। अबे ओ क्रांतिकारी, चुप हो जा। ऐसे नहीं मानेगा। *;डंडा रसीद करता हैद्ध* क्यों बे, ये क्या हो रहा है?

सूत्रधार : ड्रामा कर रहे हैं।

पुलिस : डिरामा! साले हमें चूतिया समझता है?

सूत्रधार : नहीं तो।

पुलिस : फिर?

सूत्रधार : फिर क्या?

सब : फिर क्या?

पुलिस : डिरामा ऐसे किया जाता है? *;हाथ हिलाता हैद्ध* नारे लगा वेळ, लाल झंडे उठा वेळ, हाथ में पोस्टर ले वेळ। भागो यहां से सालो, नहीं तो सबको हवालात में डाल दूंगा।

सूत्रधार : *;हँसता हैद्ध* आप यव़ळीन मानिए हम ड्रामा ही कर रहे हैं। आप पूछ लीजिए इन लोगों से। अरे हवलदार सा'ब, हम सब कलाकार हैं। जन नाट्य मंच वेळ कलाकार।

सब : हां, जन नाट्य मंच आप़ळ इंटरनेशनल पे़ळम!

।सभी पात्र पुलिसवाले को समझाते हैं।।

पुलिस : अच्छा, अच्छा, तो डिरामा कर रहे थे।

सब : जी हां।

पुलिस : तो करो, साबास। पर जरा बढ़िया-सा।

सूत्रधार : तो आप एक तरप़ळ हो जाइए। हम अभी शुरू करते हैं। चलो भई *;फिर नारा लगाता है, गाना शुरू होता हैद्ध* इंव़ळलाब ज़िंदाबाद, सीटू ज़िंदाबाद...

पुलिस : ओये, ओये, ये क्या हो रहा है? डिरामा कर डिरामा। ये नारे-वारे नहीं चलेंगे।

सूत्रधार : पर हमारे ड्रामे में तो ऐसा ही होता है।

पुलिस : तुम्हारे डिरामे में होता होगा। हमारे इलावेळ में नहीं होता। सात दिन वाली हड़ताल वेळ टैम से ही सख्ती वेळ आडर आ गए हैं। एस.एच.ओ. सा'ब का आडर है कि जो साला सीटू का नाम लेता दिखे, फौरन हवालात में डाल दो। बाद में पूछो कि क्या मांगता है।

सूत्रधार : पर हमारे ड्रामे में तो नारे लगाने ही पड़ेंगे।

सब : पर हमें तो अपने ड्रामे में नारा लगाना पड़ेगा हवलदार सा'ब!

पुलिस : *;चिल्लाता हैद्ध* न, मेरे इलावेळ में ये सब नहीं चलेगा।

सूत्रधार : फिर?

पुलिस : फिर क्या?

सूत्रधार : फिर हम ड्रामा वैळसे करें?

पुलिस : अबे जैसे डिरामा किया जाता है, और वैळसे! कोई प्यार-मुहब्बत का, आसिक-महबूबा का खेल दिखाओ, वुळछ नाच-गाना हो, हँसी-मजाक हो। वुळछ ये हो, वुळछ वो हो। *;हवलदार एक अभिनेत्री की तरफ़ळ बढ़ते हुए बोलता है।द्ध* क्या समझे?

सूत्रधार : समझ गया।

पुलिस : क्या?

सूत्रधार : आसिक-मासूका-का नाटक?

पुलिस : हां।

सूत्रधार : नारे नहीं?

पुलिस : नारे नहीं।

सूत्रधार : अच्छा ठीक है। जैसा आपका हुक्म, हम आपको आशिव़ळ-माशूव़ळावाला ही नाटक दिखाएंगे। तो साथियो, हवलदार सा'ब नारों वाला इंव़ळलाबी नाटक तो करने की इजाज़त देते नहीं, इसलिए हम आपको प्यार-मुहब्बत का नाटक दिखाते हैं।

[सारे पात्र आपस में बात करते हैं। बाग़ बनते हैं। आशिव़ळ-माशूका नाच-खेल रहे हैं।]

कोरस : आ मेरे हमजोली आ, खेलें आंख-मिचोली आ,
गलियों में चौबारों में, बाग़ों में बहारों में...

[जोगी/ अश्शो आंख-मिचोली खेलते हैं।]

जोगी : मैं आऊं?

अश्शो : न, न।

जोगी : मैं आऊं?

अश्शो : न, न।

जोगी : मैं आऊं?

अश्शो : आ जा...

जोगी : झुग्गी वेळ पीछे जा बैठी, छुपकर मेरी महबूबा,
ए... पकड़ी गई...

कोरस : ए पकड़ी गई।

अश्शो : जोगी!

जोगी : हां, अश्शो!

अश्शो : तू पिताजी से कब बात करेगा?

जोगी : बस वुळछ दिन और ठहर जा अश्शो!

अश्शो : क्यों? दो साल तो हो गए तुझे इस तरह वुळछ दिन, वुळछ दिन करते-करते।

जोगी : अश्शो, तू समझती क्यों नहीं। अभी मेरी तन्खा इत्ती कम है, तुझे रखूंगा वैळसे।

अश्शो : पर तेरी तन्खा कब बढ़ेगी। पहले तो तू कहता था कि सात दिन की हड़ताल वेळ बाद वुळछ पता चलेगा। मुझसे और इंतजार नहीं होता।

जोगी : देख अश्शो, इत्ती बड़ी हड़ताल हुई है। १३ लाख मजदूरों ने सात दिन चक्का जाम रखा है। देखती नहीं, मालिक कित्ते घबरा गए हैं। बस, अब संघर्ष को और तेज करने की बात है। तू देखियो, अगले झटवेळ में सरकार भी घुटने टेक देगी।

अश्शो : सच्ची?

जोगी : सच्ची।

अश्शो : ईमान से?

जोगी : ईमान से।

अश्शो : खा मेरी कसम।

जोगी : तेरी कसम।

अश्शो : बाई गाड?

जोगी : बाई गाड!

पुलिस : अबे ओये, ये क्या हो रहा है। सालो, प्यार-मुहब्बत वेळ नाटक में भी सीटू का परचार शुरू कर दिया। ये सब नहीं चलेगा।

सूत्रधार : ओहो, हवलदार सा'ब! आप भी हद करते हैं। अब हमारा हीरो मज़दूर है, सात दिन तक सीटू वेळ झंडे तले इतनी बहादुरी से लड़ा है तो सीटू का नाम नहीं लेगा। और आप किस-किसका मुंह बंद करवाएंगे? आज तो हर मज़दूर की ज़ुबान पर सीटू का ही नाम है।

पुलिस : न हमारे इलावेळ में नहीं लेगा।

सूत्रधार : मतलब?

पुलिस : मतलब ये कि हमारे इलावेळ वेळ आसिक को आसिक की तरह रहना होगा। इधर-उधर की हांवेळगा तो साले को हवालात में डाल दूंगा।

सूत्रधार : ठीक है हवलदार सा'ब वो सीटू का नाम नहीं लेगा पर अपनी तनख़्वाह की बात तो कर सकता है?

पुलिस : अबे ये आसिक है या मुनीम, जो अपनी मासूका से तनख्वाह की बात करता है। इससे कह कि आसिकी करनी है तो ठीक से करे और अगर नहीं होता तो मैं दिखाता हूं कि इसक वैळसे किया जाता है!

सूत्रधार : न, न, न, आप तकलीफ़ळ न करें। वो कर लेगा। कर लोगे न भई?

जोगी : हां-हां, क्यों नहीं।

सूत्रधार : तो भाइयो-बहनो, हम नाटक में फिर थोड़ा परिवर्तन कर रहे हैं। ये तो हवलदार सा'ब की मेहरबानी से सैंसर हो गया। चलो भई फिर से शुरू करो।

अश्शो : जोगी!

जोगी : हां अश्शो!

अश्शो : तू आज पिताजी से बात करेगा न?

जोगी : हां अश्शो, तुझे जबान दी है तो जरूर करूंगा।

अश्शो : देख घबराइयो नहीं! जरा डट वेळ बात करियो, जैसे कामरेड नत्थू मैनेजमेंट से करते हैं।

पुलिस : क्या, क्या छोरी ये कामरेड वामरेड कहां से आ गया?

अश्शो : ग़लती हो गई, सॉरी!... देख घबराइयो नहीं, जरा डट वेळ बात करियो जैसे भगवान राम राजा जनक से बात करते थे।

जोगी : तू फिकर मत कर, मैं तेरे पिताजी को यों, यों अपनी उंगली पर लपेट लूंगा। बस तू देखती जा कि तेरा जोगी किस मिट्टी का बना है।

अश्शो : बाबा, बाबा...

बाबा : अरी कौन मर गया? क्यों गला फाड़ रही है?

अश्शो : तुमसे कोई मिलने आया है।

बाबा : कोई लेनदार होगा। कह दे, घर पे नहीं हैं!

अश्शो : लेनदार नहीं है। कोई और है!

[बाबा व अम्मा का प्रवेश।]

बाबा : कौन है?

[अश्शो इशारा करती है। बाबा व अम्मा जोगी की परिक्रमा करते हैं।]

बाबा : कौन है भई? मैं तो तुझे पहचानता नहीं *;जोगी चुपद्ध* अबे क्या बात है? *;जोगी चुपद्ध* गूंगा है क्या? *;जोगी चुपद्ध* अबे वुळछ बोलेगा भी या यों ही सूम-सा खड़ा रहेगा?

जोगी : जोगी...

बाबा : जोगी?

जोगी : जोगी, जोगी नाम है मेरा जी! नहीं, माने जोगिंदर, माने, नहीं, माने जोगिंदर सिंह, माने जोगी, जोगिंदर, जोगी जोगिंदर...

बाबा : क्या गोभी-चुकंदर गोभी-चुकंदर लगा रखी है। बोल किस काम से आया है?

जोगी : नहीं, माने यूं ही, बस ऐसे ही, माने टैम पास, माने मैं चलता हूं।

बाबा : *;गिरेबान पकड़ वेळद्ध* अबे जाता कहां है? बोल किस मतलब से आया था? मुझे तो सुसरा कोई चोर-उचक्का लगे!

[अश्शो ज़ोर से रोती है।]

बाबा : चुप! अरी तुझे क्या हो गया! हैं?

अश्शो : *;रोते-रोतेद्ध* ये चोर नहीं है।

बाबा : तू वैळसे जानती है इसे?

अश्शो : *;रोते-रोते, हिचकियों वेळ बीचद्ध* ये... माने जोगी... माने मेरे से... माने तुमसे, माने... अम्मा री

[अपनी मां से लिपट जाती है और दोनों रोने लगती हैं।]

बाबा : अरी क्या माने-माने लगा रखी है। ठीक से बोल।

[अम्मा बाबा का हाथ खींचकर एक तरफ़ ले जाती है।]

अम्मा : तुम भी हद करते हो! खुसपुळस-खुसपुळस!

बाबा : खुसपुळस-खुसपुळस!

अम्मा : हां! और सुनो, खुसपुळस-खुसपुळस!

बाबा : खुसपुळस-खुसपुळस, खुसपुळस-खुसपुळस! *;जोगी सेद्ध* अच्छा! तो ये चक्कर है। तो तू मेरी बेटी से शादी करना चाहता है!

जोगी : जी मैं, माने वही कहने जा रहा था।

बाबा : ये माने-वाने छोड़, असली बात पर आ जा!

जोगी : जी, मैं उसे पलकों पर बिठा वेळ रखूंगा, रानी बनाऊंगा, पूरे टब्बर पर...

बाबा : ये डालौगबाजी रहने दे, बता काम क्या करता है?

जोगी : जी, पैळक्ट्री में काम करता हूं।

अम्मा : क्या काम करता है? मनैजर है?

जोगी : नहीं जी, उससे थोड़ा नीचे।

बाबा : सुपरवाइजर?

जोगी : थोड़ा और नीचे।

अम्मा : डिपाट इंचारज?

जोगी : बस थोड़ा और नीचे।

बाबा : इकौटेंट?

जोगी : थोड़ा और नीचे।

दोनों : थोड़ा और नीचे? तो क्या वर्वळर है?

जोगी : जी, मसीन मैन।

सब : *;कोरसद्ध* जी मसीन मैन।

बाबा : मुझे पता था, ऐसे ही गए-गुजरे से आएगा रिश्ता हमारी बेटी वेळ लिए!

अम्मा : खुसपुळस-खुसपुळस!

बाबा : खुसपुळस-खुसपुळस!

जोगी : तो जी मैं ये रिश्ता पक्का समझूं?

बाबा : *;जूता हाथ में लेकर जोगी वेळ पीछे दौड़ता हैद्ध* आ मैं तेरा रिश्ता पक्का करूं! साले, दो कौड़ी वेळ वर्वळर, फ़ळकीर की औलाद, साले ५६२ तन्खाह पाता है और सपने देखता है शादी करने वेळ!

अम्मा : *;जूता हाथ में लेकर जोगी का पीछा करती हैद्ध* बड़ा आया शादी करने वाला! हमें अपनी बिटिया को जीते-जी नहीं मारना तेरे से शादी करा वेळ!

[अश्शो पीछे-पीछे भागती है।]

अश्शो : बाबा! अरी अम्मा री! उसे मत मारो! उसे छोड़ दो!
बाबा : जूते मारूं...
सब : ५६२
बाबा : थप्पड़ मारूं...
सब : ५६२
बाबा : लातें मारूं...
सब : ५६२
बाबा : ऐसी-तैसी
सब : ५६२
बाबा : नून तेल का।
सब : ५६२
बाबा : भाव बता दूं।
सब : ५६२
जोगी : देखो, देखो हाथ मत उठाना। हां!
बाबा : जरूर उठाऊंगा, सौ बार उठाऊंगा। ५६२ बार उठाऊंगा।
जोगी : मैं बताए दे रहा हूं अश्शो, रोक ले अपने बाबा को, नहीं तो खून पी जाऊंगा बुढ़ऊ का!
बाबा : साले, तेरी ये मजाल कि मुझे धमकाता है। मैं तुझे गिन-गिन वेळ जूते लगाऊंगा!
अश्शो : पहले मुझे मारो, बाद में जोगी पर हाथ उठाओ!
अम्मा : बेटी, तू मत पड़ मर्दों वेळ झगड़े में। इधर आ जा!
अश्शो : छोड़ दो मुझे। और कान खोलकर सुन लो। मैं सादी करूंगी तो जोगी से, नहीं तो पूरी जिंदगानी वुळंवारी बैठी रहूंगी।
अम्मा : हाय बेटी, ये क्या कहती है। ऐसी मनहूस बात क्यूं जबान पर लाती है। इस मुए ५६२ वेळ वर्वळर से सादी का खयाल मन से निकाल दे।
बाबा : बिटिया, जरा सोच तो सही। ५६२ में क्या ये खुद खाएगा, क्या तुझे खिलाएगा।
अम्मा : इतनी कम तन्खा पानेवाला साल दो साल में भगवान को प्यारा हो जाएगा बिटिया! तू भरी जवानी में बेवा हो जाएगी!
बाबा : दिल्ली वेळ वर्वळर का क्या हाल है, तुझे नहीं मालूम बेटी!
अम्मा : आज नौकरी है, कल नहीं है।
बाबा : आज इस पैळक्टरी में क्लोजर, कल उसमें तालाबंदी।
अम्मा : गंदी बस्तियों में बसेरा। न बिजली न पानी।
बाबा : और गुंडे-बदमाशों का डेरा।
अम्मा : रोज-रोज पुलिस की मार खाना।
बाबा : और तिहाड़ जेल में रात बिताना। *;चुप्पी वेळ बादद्ध* बिटिया, अकल से काम ले। ये खयाल छोड़ दे।
अम्मा : मजदूर से सादी करने का मतलब है जीते-जी मर जाना।
अश्शो : मैं उसवेळ बगैर नहीं रह सकती। मेरी सादी जोगी से ना हुई तो मैं जान दे दूंगी।

[मां रोती है।]

अम्मा : *;बाबा सेद्ध* खुसपुळस-खुसपुळस!
बाबा : खुसपुळस-खुसपुळस। *;जोगी सेद्ध* जोगी बेटा, देख, हमें तेरे से कोई दुश्मनी नहीं। तू शरीफ़ळ और मेहनती लड़का लगता है।
अम्मा : पर हमें अपनी बेटी वेळ बारे में भी तो सोचना है बेटा!
जोगी : मैंने सब सोच लिया है माताजी! मैं बीड़ी, सिगरेट, चाय, सब छोड़ दूंगा।
बाबा : बचपने की बातें मत कर बेटा! मज़दूरपेशा आदमी बीड़ी-चाय छोड़ देगा तो आठ घंटे मेहनत वैळसे करेगा।
जोगी : मैं घर पैसे भेजने बंद कर दूंगा। बस में आना-जाना छोड़, पैदल काम पर जाऊंगा। साम को कोई और मजूरी करूंगा।
बाबा : *;चिढ़ाता हैद्ध* ताकि मैं दो-तीन साल में ही भगवान को प्यारा हो जाऊं।
अम्मा : *;तंज़ मेंद्ध* ताकि मेरी बीवी बेवा हो जाए।
बाबा : ये सब बेकार की बातें हैं। मैंने हिसाब लगा वेळ देख लिया है। इस शहर में हज़ार-ग्यारह सौ से कम में कोई नहीं रह सकता।
अम्मा : आदमी तो दूर, जानवर भी नहीं रह सकता!
जोगी : जी, वो यूनियनवाले भी यही कहते हैं कि वेज कम-से-कम १०५० तो होना ही चाहिए।
अम्मा : बिल्कुळल सही कहते हैं।
बाबा : तो बिटुआ, कोई ऐसी नौकरी पकड़ जिसमें १०५० मिलते हों। फिर हम अश्शो की शादी तुमसे खुशी-खुशी कर देंगे।
अश्शो : पर ऐसी नौकरी मिलेगी कहां।
जोगी : सब जगह ५६२ ही तो मिलते हैं।
अम्मा : तो बेटा, तू मालिक से कह-सुनकर अपनी तन्खा बढ़वाने की कोशिश तो कर।
जोगी : अजी हां, माताजी, सालों ने रो-रोकर दो साल में ७३ रुपये बढ़ाए हैं, वो भी इत्ती लंबी लड़ाई वेळ बाद। अभी ये सात दिन की हड़ताल लड़ी, मालिक तो डर वेळ मारे बढ़ाने को तैयार भी हैं, पर सरकार वेळ कान पर अब तक जूं भी नहीं रेंगी है।
दोनों : तो बेटा, हाथ पर हाथ धर वेळ मत बैठो, अपनी लड़ाई को और तेज़ करो।
जोगी : वो तो आपवेळ बताए बगैर भी कर रहे हैं। अब तो सारे

वेळ सारे मजदूर सीटू वेळ मैंबर बनेंगे और उसका झंडा उठाकर और लंबी लड़ाई लड़ेंगे।

□पुलिस वाला आता है।□

पुलिस : फिर! फिर सालो, मैं वुळछ कह नहीं रहा तो तुम पैळलते ही जा रहे हो। बहुत हो गया, उठाओ अपना ताम-तोबड़ा और चलते-फिरते नजर आओ।

सूत्रधार : हवलदार सा'ब, आपने नारे लगाने, झंडे उठाने को मना किया था, हमने उन्हें एक तरप़ळ रख दिया। अब क्या परेशानी है?

पुलिस : अबे, तो मुझे क्या पता था कि तुम झंडों और नारों वेळ बगैर भी मजदूरों को भड़का सकते हो। बस, अब मैं वुळछ और नहीं सुनना चाहता। तुम खिसक लो यहां से।

सूत्रधार : आपकी खोपड़ी में इत्ती-सी बात क्यों नहीं आती कि मज़दूर की ज़िंदगी पर नाटक करेंगे तो चाहे झंडा उठाएं या न उठाएं, नारे लगाएं या न लगाएं, बात वहीं पर पहुंचती है कि जीना है तो लड़ना होगा।

सब : जीना है तो लड़ना होगा।

जोगी : प्यार भी करना है तो भी लड़ना होगा।

पुलिस : तो ऐसा नाटक करने वेळ लिए भी तुम्हें मुझसे लड़ना होगा। है कोई जो आगे आए।

सूत्रधार : भाड़ में जाओ, नहीं करते नाटक। साले, इमरजेंसी अभी लगी नहीं, ये सैंसरशिप पहले से ही शुरू हो गई। चलो साथियो, हमें नहीं करना नाटक।

□सब सामान उठाने जाते हैं।□

पात्र १ : रुको, एक मिनट। *;सब रुकते हैं। हवलदार सेद्ध* आपने कहा कि नारे, लाल झंडा, सीटू वगैरा का नाम नहीं आना चाहिए। लेकिन अगर हमारा नाटक उनवेळ ख़िलाप़ळ हो तो?

पुलिस : वैसे तो एस.एच.ओ. सा'ब का आडर है कि सीटू का नाम भी नहीं आना चाहिए। लेकिन अगर तुम उनवेळ खिलाफ नाटक करो तो हो सकता है मेरी प्रोमोशन हो जाए और मैं सब-इंस्पेक्टर बन जाऊं फिर इंस्पेक्टर, फिर उसवेळ बाद ए.सी.पी. और फिर डी.सी.पी. तो हम बन ही जाएंगे... *;सपने देखने लगता है।द्ध*

पात्र १ : लाठी सिंह सा'ब, अपने हसीन सपनों की दुनिया से निकलकर ज़रा धरती पर लौट आइए। हां, तो हम फिर अपना नाटक शुरू करें। हवलदार जी, ए.सी.पी. साहब, ओ डी.सी.पी. सा'ब।

पुलिस : *;चौंककर सपनों की दुनिया से बाहर आता है।द्ध* हां, हां। *;बैठ जाता हैद्ध।* तो शुरू करो।

□सब पात्र सलाह करते हैं और नाटक फिर शुरू होता है। सीटू का झंडा उठाए, कराहता, लंगड़ाता जोगी आता है।□

जोगी : हम भूख से मरनेवाले, क्या मौत से डरनेवाले
आज़ादी का डंका बजा, उठाओ अग्नि ध्वजा...

□चार लीडर उसे घेरकर उसवेळ गिर्द घूमते हैं।□

चारों : क्यों जोगी? आ गए होश ठिकाने?

लीडर १ : वैळसी लगी पुलिस की मार?

लीडर २ : हवालात में ठुल्लों ने रोटी-वोटी भी दी या भूखे-प्यासे ही पड़े रहे?

लीडर ३ : सीटूवालों ने जेल में चक्की भी पिसवा दी बेचारे से।

लीडर ४ : अरे ये किस खेत की मूली है। जेल में तो इनवेळ एम. पी. तक की ठुकाई हो गई।

चारों : हा! हा! हा! हा!

लीडर १ : हम तो पहले भी तुम्हें समझाते थे कि मत पड़ो सीटूवालों वेळ चक्कर में।

लीडर २ : पर न, उन्होंने तुम्हें भरी दी और तुम वूळद पड़े सात दिन की हड़ताल में।

लीडर ३ : पर हाथ क्या आया? कद्दू?

लीडर ४ : अब ऊपर से सात दिन का वेज जो कटेगा सो अलग।

जोगी : वेज कटेगा?

चारों : और नहीं तो क्या! पूरे सात दिन का!

जोगी : पर वो सीटूवाले तो कहते थे कि हड़ताल करने से १०५० वेज मिलेगा, २ रुपये आंकड़ा महंगाई भत्ता मिलेगा!

लीडर १ : सब्ज़बाग़ दिखलाना इसी को कहते हैं। तेरे जैसे भोले-भाले मज़दूरों को लालच दिखाकर अपना उल्लू सीधा किया है इन सीटूवालों ने।

लीडर २ : अब जावेळ पूछ उनसे□क्या हुआ उन वादों का। ठेवेळदारी ख़त्म कराने चले थे□हो गई?

लीडर ३ : पक्वेळ मकान दिला रहे थे, औरतों वेळ लिए बालघर बनवा रहे थे□मिला वुळछ?

लीडर ४ : अजी ये तो वुळछ नहीं□सीधे मज़दूर-विरोधी व़ळानून रद्द करवा रहे थे, बंद प़ैळक्ट्रियां खुलवा रहे थे, पुलिस-दमन रुकवा रहे थे।

चारों : हा-हा-हा! यूं कहो दिल्ली में मज़दूरों वेळ लिए स्वर्ग बनवा रहे थे।

लीडर १ : जोगी, अब भी वक़्त है। चेत जा और झाड़ ले पल्ला सीटूवालों से।

लीडर २ : हम में से किसी की भी यूनियन में आ जा। अब हम सब एक हो गए हैं।

लीडर ३ : और ये भी मंज़ूर नहीं तो चक्कर ही छोड़ यूनियनबाज़ी

का। तुझे कोई परेशानी हुई तो हम हैं ही।

लीडर ४ : ला दे, ये झंडा हमें दे। इसे फाड़ वेळ फेंक देते हैं।

चारों : न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी।

जोगी से झंडा लेते हैं। डंडा जोगी वेळ हाथ में रह जाता है। चारों झंडे को खींचते हैं। जोगी डंडा उठाता है। झंडा वापस खींच लेता है।

जोगी : खबरदार! छोड़ दो झंडे को। गद्दारो, मालिकों वेळ दलालो, तुम्हारी हिम्मत वैळसे हुई मजदूरों वेळ झंडे को अपने नापाक हाथों से छूने की!

बाव़ळी कलाकार भी खड़े होते हैं।

सब : ए, ए, जोगी क्या करते हो। हमें सीटू वेळ ख़िलाप़ळ नाटक करना था। हवलदार सा'ब बैठे हैं। बेकार में तू सबको पिटवाएगा।

जोगी : नहीं, नहीं करूंगा मैं सीटू वेळ खिलाफ नाटक। सीटू की यूनियन मेरी यूनियन है। सीटू का ये झंडा मेरा झंडा है। मैंने देख लिया है कि सीटू ही है जो मजदूरों वेळ लिए लड़ती है। इस सात दिन की हड़ताल में अपने हक वेळ लिए, इंसानी जिंदगी वेळ लिए लड़ने का रास्ता मुझे सीटू ने ही दिखाया है। कहां मुंह काला कर रहे थे ये दूसरी यूनियनों वाले जब हम पर पुलिस की लाठियां पड़ रही थीं। क्यों घुसे बैठे थे अपने बिलों में जब मैं हवालात में भूखा-प्यासा पड़ा था। जब पुलिसवाले औरतों को पीट रहे थे, हमारे लीडरों को गिरफ्तार कर रहे थे तो क्या उन्हें सांप सूंघ गया था। नहीं। तब ये अखबारों में बयान जारी करवेळ सीटू को बुरा-भला कह रहे थे। मजदूरों को पैळक्ट्रियों से निकलने से रोक रहे थे। इन गद्दारों को मैंने अच्छी तरह पहचान लिया है। अब मेरे लिए एक ही यूनियन हैसीटू। अब मैं ही सीटू हूं। मैं सीटू वेळ खिलाफ एक लफ्ज भी नहीं बोलूंगा। हवलदार तो क्या, चाहे दिल्ली की सारी पुलिस मेरी छाती पर सवार हो जाएमेरी जबान से एक ही आवाज निकलेगीसी.आई.टी.यू. जिंदाबाद, इंकलाब जिंदाबाद!

पुलिस : साले, तू फिर शुरू हो गया? दो-चार लाठियां मारूंगा तो होश ठिकाने आ जाएंगे।

जोगी : एक नहीं, हजार लाठी-डंडे बरसाओ, आज मैं चुप नहीं रहूंगा। इस देश का मजदूर आज चुप नहीं रहेगा। जो मजदूर जान गंवाने से नहीं डरता वो लाठी से क्या डरेगा? *;गाता हैद्ध*

हम भूख से मरने वाले, क्या मौत से डरने वाले
आज़ादी का डंका बजा, उठाओ अग्नि ध्वजा
वर्गयु(की शेष पुकार, आती है बारंबार
हो तैयार हो तैयार...

सारे कलाकार जोगी वेळ पीछे खड़े हो गए हैं। एक लोकल नेता और चमचा आते हैं।

नेता : यह वैळसा शोर है?

पुलिस : अरे नेताजी, अच्छा हुआ आप आ गए *;जोगी को खींचते हुएद्ध* यह हरामजादा इनको भड़का रहा है। मैंने मना किया तो मुझी को आंखें दिखाता है।

नेता : साले, कल तक तो हमें देखकर कांपते थे। सात दिन की हड़ताल क्या कर ली, हमें ही आंखें दिखाते हो। आज लाल झंडे से हम ही को धमकाते हो? भूलो मत, आज तुम इन झुग्गियों में मेरी वृळपा से रह रहे हो। अगर मैं चाहूं तो डी.डी.ए. वेळ बुलडोज़र एक मिनट में इस बस्ती को सपाट कर दें।

चमचा : नेताजी ठीक कहते हैं। आज हम इन्हीं की बदौलत तो यहां पर रह रहे हैं। सीटू वेळ चक्कर में पड़ोगे तो यह झोपड़े भी हाथ से चले जाएंगे।

जोगी : अरे यह कचरे वेळ डिब्बे भी कोई मकान हैं?

बाव़ळी पात्र भी बोलना शुरू करते हैं।

मज़दूर १ : और क्या, चारों तरफ गंदगी ही गंदगी है।

मज़दूर ४ : पीने वेळ पानी और गटर वेळ पानी में कोई अंतर नहीं है।

मज़दूर ३ : आधी से ज़्यादा झुग्गियों में बिजली भी नहीं है।

मज़दूर २ : जहां है, वहां इन गुंडों को हफ़्ता और बिजली वालों को रिश्वत देनी पड़ती है।

सूत्रधार : दूर-दूर तक कोई सरकारी हस्पताल नहीं है।

जोगी : सीटू ने कह दिया है कि इन जैसी झुग्गियों वेळ लिए हम तुम-जैसे गुंडों को हफ्ता न दें।

नेता : सालो, जब ये झुग्गियां साप़ळ हो जाएंगी न, तब पता चलेगा। दर-दर की ठोकरें खाते फिरोगे। फिर मत कहना कि पहले नहीं बताया।

सब : अरे जा-जा। बहुत देखे हैं तेरे जैसे। साले, फिर ऐसे वुळछ कहा तो हड्डी-पसली एक कर देंगे।

नेता, चमचा और पुलिसवाला भागते हैं और बाहर निकल जाते हैं। बाव़ळी अभिनेता नारे लगाते हैं।

जोगी : अपनी मांगें ले वेळ रहेंगे।

सूत्रधार : हमें सरकार की तरप़ळ से पक्वेळ मकान मिलें।

मज़दूर १ : जहां वूळड़ा-करकट और गंदगी न हो।

मज़दूर २ : जहां बिजली और पानी का पूरा बंदोबस्त हो।

मज़दूर ३ : जहां बच्चों वेळ पढ़ने वेळ लिए स्वूळल हों और रोगियों वेळ लिए अस्पताल हों।

मज़दूर ४ : जहां बच्चों वेळ खेलने वेळ लिए मैदान हों।

कोरस : इन मांगों वेळ लिए, हम अपनी लड़ाई, और तेज़ करेंगे।

सूत्रधार : आज दिल्ली वेळ मज़दूर वेळ सब जगह यही तेवर हैं। अब वो चुपचाप बैठने को तैयार नहीं हैं। पैळक्ट्रियों में वो जीने लायव़ळ वेतन वेळ लिए लड़ रहा है, नौकरी बचाने वेळ लिए लड़ रहा है, बस्तियों में बेहतर मकानों वेळ लिए लड़ रहा है।

कोरस : हर जगह, हर समय, इंसान का जीवन जीने वेळ लिए लड़ रहा है।

सूत्रधार : यही नहीं, अब दिल्ली की महिला मज़दूरों ने भी संघर्ष का रास्ता अपना लिया है। आइए, आपको ऐसी ही एक महिला मज़दूर से मिलवाते हैं।

[सब बैठते हैं। बच्चे को गोद में उठाए पारबती आती है।]

पारबती : अरे मैं कहती हूं तेरी लाश सड़े, उसमें कीड़े पड़ें, तेरी चिता पर वुळत्ते मूतें। हराम वेळ जने तुझे हैजा हो जाए। अंधेरगर्दी मचा रखी है हरामियों ने। थोबड़ा फाड़ वेळ कह दिया 'बच्चा अंदर नहीं जा सकता।' अरे बच्चे को अपने साथ काम पर न लाऊं तो क्या सरकारी घूरे पर पेळंक दूं। देख लो भइयाजी, ये वैळसी नाइंसाफी है। कामकाजी औरत बच्चे को काम पर न ले जा सवेळ तो काम वैळसे करे? कल तलक मेरा आदमी मुन्नी को देखता था। आज उसे काम मिल गया तो मैं इसे अपने साथ ले आई। सुसरे टैमकीपर ने फाटक पर ही रोक दिया। कहता है, बच्चे को अंदर ले जाने का हुक्म न है। ठीक है, मैं भी खड़ी हूं यहीं पर। अभी शिफ्ट छूटेगी तो बताऊंगी यूनियनवालों को कि यहां क्या चल रहा है।

[हूटर बजता है। मज़दूर बाहर आते हैं।]

पारबती : अरे ओ जोगी, रामपाल रे... मेरी नौकरी चली जाएगी रे! टैमकीपर ने मुझे अंदर न जाने दिया आज।

जोगी : क्यों न जाने दिया?

चमचा : पारबती, झूठ मत ना बोले। सारी बात मेरे सामने हुई थी। टैमकीपर ने तुझे नहीं रोका था, तेरे बच्चे को रोका था।

पारबती : और कोई बोले या न बोले, ये चमचा अपनी चोंच जरूर खोलेगा। अरे मैं बच्ची को अंदर ना ले जा सवूळं तो क्या उसे बाहर सड़क पर पटक दूं?

रामपाल : पर तू मुन्नी को संग लाई क्यूं?

एक औरत : इसवेळ मरद को काम मिल गया है भई, कहां छोड़कर आती?

पारबती : हां, घर में कोई ना है बच्ची को देखने वाला।

रामपाल : वो तो ठीक है पारबती! लेकिन बच्ची अंदर कहां रहेगी?

पारबती : पड़ी रहेगी एक कोने में। किसी से वुळछ कहती है क्या?

चमचा : नहीं, ऐसे वैळसे हो सकता है। आज ये लाई है, कल सारी उठाकर ले आएंगी। जिसे बच्चे पालने हों घर पे बैठे!

पारबती : तू तो बोलई मत। मुंह नोच लूंगी तेरा। बड़ा आया घर पर बिठाने वाला। तन्खा तेरा ताऊ देगा महीने-महीने?

दूसरी औरत : मैं भी अपने छोरा को पड़ौस में छोड़कर आती हूं। साम तलक भूखा पड़ा रहवै बिचारा।

एक औरत : मेरी लौंडिया भी दिन-भर मुहल्ले-भर में भटकती फिरे।

पारबती : तुम यूनियन चलाते हो, इसका कोई इंतजाम नहीं करा सकते?

रामपाल : इसमें यूनियन क्या कर सकती है?

पारबती : क्यों न कर सकती? मील में भी बच्चों को रखने का बंदोबस्त होना चाहिए। ये मांग भी तो थी हड़ताल की।

रामपाल : देख पारबती, हमने १०५० वेज वेळ लिए, २ रुपये महंगाई-भत्ते वेळ लिए, ठेवेळदारी वेळ ख़िलाफ़ळ इत्ती बड़ी-बड़ी मांगों पर सात दिन की हड़ताल लड़ी। मालिक घबरा गए हैं। अब ज़रा-सा-ज़ोर लगाएं तो उन्हें ये मांगें माननी पड़ेंगी। ये छोटी-मोटी मांगें उठाएंगे तो हमारी लड़ाई कमज़ोर हो जाएगी।

पारबती : छोटी-मोटी? ये छोटी-मोटी मांग ना है रामपाल! ये मेरी नौकरी का सवाल है।

औरतें : हां यह भी मांग थी हड़ताल की।

पारबती : निकाल, निकाल पर्चा जोगी, साफ-साफ लिखा है सीटू वेळ परचे में जिस मील में औरतें काम करें, वहां बालघर बनाना पड़ेगा।

रामपाल : जोगी, ज़रा सोच ले। मेरी राय में इससे हमारी लड़ाई कमज़ोर पड़ जाएगी।

चमचा : हां, सही बात है।

पारबती : तू तो बोलई मत। उलटी बात मत ना कर रामपाल। तू वैळसा सीटू का लीडर है? सीटू ने ही तो बालघर की मांग रखी थी। हमारी यूनियन ने ये मांग उठाई। इसीलिए सगरी औरतें साथ आई हैं। क्यों री?

एक औरत : और क्या?

दूसरी औरत : मैं तो खासतौर पर इसीलिए हड़ताल पर गई थी।

पारबती : औरतों वेळ आने से लड़ाई मजबूत हुई है या कि कमजोर? पागल न हो तो!

दूसरी औरत : जिस मिल में हो वर्वळर महिला

सब : बच्चे रखने की हो सुविधा

सूत्रधार : हर ज़ोर-ज़ुलुम की टक्कर में...

[सब जुलूस वेळ रूप में चलते हैं।]

जोगी : गुलाम रसूल, राघवन, तुम लोग जुलूस में नहीं चलोगे क्या?

[दोनों ख़ामोश खड़े हैं।]

जोगी : चलो भई, देखो सभी मजदूर जुलूस में शामिल हैं। औरतें भी। तुम भी चलो।

[अब भी ख़ामोश हैं।]

जोगी : क्या बात हो गई?

राघवन : कामरेड, तुम्हारे कहने पर हम तुम्हारे साथ सात दिन हड़ताल पर रहे, जबकि वेज बढ़ने से हमें कोई फायदा नहीं होना था। हम ठहरे ठेवेळ वेळ मजदूर।

ग़ुलाम रसूल : तुम जानते हो, आठवें दिन जब हम काम पर लौटे थे तो ठेवेळदार ने वापस लेने से साफ इंकार कर दिया था।

रामपाल : हां, और सीटू ने ही तुम्हें वापस काम पर रखवाया था। ये मत भूलो। *;जोगी रोकता है।ध्द*

राघवन : और बाद में ठेवेळदार वेळ गुंडों ने धमकी जो दी थी कि आगे कभी सीटू वेळ साथ गए तो हड्डी-पसली एक कर देंगे।

जोगी : इसीलिए तो कहता हूं यूनियन में आ जाओ। अलग-थलग रहोगे तो वो तुम्हें आसानी से वुळचल डालेंगे।

ग़ुलाम रसूल : बात तो तुम्हारी ठीक है जोगी भैया, लेकिन हम यूनियन में आए तो ठेवेळदार हमें खड़े-खड़े निकाल बाहर करेगा। हमारे बच्चे भूखों मर जाएंगे। चल राघवन, हम तो काम पर चलें।

[दोनों जाने लगते हैं।]

रामपाल : *;राघवन की ओर आक्रामक तरीवेळ से बढ़करध्द* मैं देखता हूं सालो, वैळसे काम पर जाते हो। मैं पहले भी कहता था जोगी, इन सालों वेळ चक्कर में मत पड़ो। *;धक्का-मुक्कीध्द* पक्वेळ मज़दूरों की नौकरियां दबाकर बैठ जाते हैं, ढाई सौ-तीन सौ में काम करने को राज़ी हो जाते हैं *;धक्का-मुक्कीध्द*। ये बेपेंदी वेळ लोटे हैं, सालों का कोई भरोसा नहीं *;धक्का-मुक्कीध्द* सालो, ठेवेळदार तो बाद में, पहले मैं ही तुम्हारी हड्डी-पसली तोड़ता हूं *;धक्का-मुक्कीध्द* छोड़ दो मुझे।

राघवन : अबे जा-जा, बड़ा आया! न तेरी टांगें तोड़ डालीं तो।

[जोगी उन्हें अलग-अलग करता है।]

जोगी : पागल मत बनो। रामपाल, तुम्हारे जैसे जिम्मेदार कार्यकर्ता से ये उम्मीद तो नहीं थी। इतनी मुश्किल से मजदूरों में एका बना है। संघर्ष तेज हो रहा है, और तुम अपने भाइयों को ही संघर्ष से हटा रहे हो। भूलो मत, मालिक और उनवेळ दलाल इसी ताक में बैठे हैं कि कोई मजदूरों में पूळट डलवाए तो वो आकर हाथ सेवेळं। जरा अक्ल से काम लो। चलो गुलाम रसूल, राघवन, जुलूस वेळ साथ चलो।

[जोगी ठेका-मज़दूरों वेळ पास जाता है।]

गुलाम रसूल : पर जोगी भाई, हमें ये भी तो समझाओ कि तुम्हारे साथ चलकर हमें मिलेगा क्या। चाहे वुळछ हो जाए, हमें तो वही ३००-३५० मिलने हैं।

जोगी : फिर वही बात। तुम्हें पहले भी बताया था, हमारे चार्टर में ये जो मांग है कि समान काम का समान वेतन मिले. ..

कोरस : समान काम , समान वेतन...

जोगी : ये किसकी मांग है?

गुलाम रसूल : है तो हमारी ही...

जोगी : हां, ये तुम्हारे जैसे ठेवेळ वेळ मजदूरों की मांग है। काम तो तुम करते हो कंपनी वेळ वर्वळर जितना, पर वेज पाते हो औना-पौना।

गुलाम रसूल : वेज तो कम मिलता ही है, ई.एस.आई., बोनस, बीमा, ग्रैचुटी वुळछ भी नहीं मिलता।

राघवन : और जब मरजी भेड़-बकरियों की तरह बाहर हांक देते हैं। हमारी तो लेबर आफिस में भी सुनवाई नहीं।

जोगी : तभी तो हम कहते हैं कि ठेवेळदारी प्रथा को खत्म करो।

सूत्रधार : ठेवेळदारी का अंत करो।

कोरस : इस बीमारी का अंत करो।

सूत्रधार : ठेवेळदारी का अंत करो।

कोरस : इस बीमारी का अंत करो।

गुलाम रसूल : ठेका-मज़दूरों को काम की जगह पर ही पक्का करो। कंपनी-रजिस्टर में नाम लिखो।

राघवन : बराबर वेतन ले वेळ रहेंगे, ई.एस.आई., बोनस, बीमा, ग्रैचुटी सब ले वेळ रहेंगे।

रामपाल : अरे ऐसे ही नहीं मिल जाते ई.एस.आई., बीमा, बोनस, ग्रैचुटी। उसवेळ लिए लड़ना पड़ेगा।

जोगी : सब मजदूरों को साथ आना पड़ेगा।

सूत्रधार : सीटू का मेंबर बनना पड़ेगा।

औरत : ये लड़ाई सब मजदूरों की लड़ाई है।

पारबती : चाहे मर्द हो या औरत।

सूत्रधार : कच्चा हो या पक्का।

रामपाल : कंपनी का हो या ठेवेळदार का।

गुलाम रसूल : बाव़ळी सारी मांगें भले ही मान लें, ये मांग कभी नहीं मानेंगे साले।

जोगी : ऐसा क्यों सोचते हो गुलाम रसूल भाई?

ग़ुलाम रसूल : बाव़ळी सारी मांगों पर तो सारे मज़दूर साथ हैं, ये सिरप़ळ हमारी मांग है। कल को तुम्हारी मांगें मान ली जाएंगी तो तुम हमें भूल जाओगे, हमें पता है। हमारी भलाई इसी में है कि ठेवेळदार से बना वेळ रखें।

औरत २ : क्या कह रहे हो गुलाम रसूल, ये सिरफ तुम्हारी मांग नहीं है, ये हमारी भी मांग है। औरतें भी मरदों वेळ बराबर कमरतोड़ काम करती हैं पर वेज कम मिलता है उन्हें।

सूत्रधार : जिन पैळक्ट्रियों में यूनियन नहीं हैं वहां वेळ पक्वेळ मज़दूरों का भी यही हाल है। मालिक ५६२ पर अंगूठा लगवाकर ३००-४०० पकड़ा देता है।

राघवन : पर भैया, जब तक हम पक्वेळ नहीं होते हमें बचाने वाला कोई नहीं है। चल गुलाम रसूल।

[दोनों जाते हैं।]

पारबती : गुलाम रसूल, राघवन! ठहरो! मजदूर ही मजदूर को बचाएगा। यह डर छोड़ो और सीटू में शामिल हो जाओ। इसी में सबकी भलाई है।

गाना : जैसे सुर से सुर मिले हों राग वेळ
जैसे शोले मिल वेळ बढ़े आग वेळ
जिस तरह चिराग़ से जले चिराग़
ऐसे चलो भेद तेरा मेरा त्याग वेळ
मिल वेळ चलो मिल वेळ चलो
मिल वेळ चलो।

[सब जुलूस की शक्ल में खड़े हो जाते हैं।]

सूत्रधार : साथियो, यह थी मज़दूरों वेळ जीवन की जीती-जागती तस्वीर।

कोरस : लेकिन जाने से पहले हम आपसे एक बार फिर कहना चाहते हैं।

सूत्रधार : कि अपनी मांगों वेळ लिए संघर्ष को तेज़ करना सब मज़दूरों की ज़रूरत है।

कोरस : सब मेहनत करने वालों की,
सब भूखे रहनेवालों की,
सब ठेवेळ वेळ मज़दूरों की, महव़ूळमों की, मजबूरों की,
सीटू की जो भी मांगें हैं, सब मज़दूरों की मांगें हैं।
हर मेहनतकश की मांगें हैं, और हर बेबस की मांगें हैं।
क्लोज़र, छंटनी, तालाबंदी, पर हो सरकारी पाबंदी।
दो रुपये आंकड़ा भत्ता हो, सिर पर छत, तन पर लत्ता हो
मज़दूर विरोधी व़ळानूनों को, वापस ले सरकार अभी,
क्या एस्मा और क्या एन.एस.ए., सब वापस ले सरकार अभी।
जिस मिल में हों वर्वळर महिला, बच्चे रखने की हो सुविधा।
ठेवेळदारी का अंत करो, इस बीमारी का अंत करो।
और बंद करो ये पुलिस दमन, ये लाठी, गोली का शासन।
लड़कर लेंगे मांगे सारी, ये देखेगी दुनिया सारी।
मज़बूत हमारा एका है, झंडा ऊंचा लहराता है।
मज़दूर विरोधी हाकिम तक, ये संदेशा पहुंचाता है।

सूत्रधार : हर ज़ोर-जुल्म की टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है।

o